दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 21.09.2018

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 21 सितम्बर 2018 को दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के समापन सत्र के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. के.एन. सिंह, कुलपति राजर्षिटन्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने कहा कि यह देश ऋषियों, महर्षियों एवं महा पुरूषों की स्थली रही है, जिसमें सत युग में हरिश्चन्द, द्वापर में भगवान कृष्ण, त्रेता में भगवान राम जबकि कलि युग में शंकराचार्य स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती जैसे महा पुरूषों का अभ्युदय हुआ, उसी कड़ी में महन्त दिग्विजयनाथ भी थे जिन्होंने सन्तों और महा पुरूषों की समृद्ध परम्परा को आगे बढ़ाया। उनका आदर्श सशक्त भारत, समर्थ भारत और स्वाभिमानी भारत के निर्माण का था जिसके लिए उन्होंने अध्यात्म का मार्ग चुना, लेकिन उन्होंने ऐसा व्यक्तिगत हित साधना के लिए नहीं बल्कि दूसरों के सुख और हित की कामना से किया था। उनका यह सिद्धान्त था कि महा पुरूष अपने लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए जीता है, तथा उनकी साधना सर्वसमाज के कल्याण के लिए होती है।

इन्होंने जियो और जीने दो की परिकल्पना के विपरीत जीने दो और जियो की भावना को साकार किया। इसलिए इन्होंने अपने समस्त सुख, वैभव की तिलान्जलि दे कर सर्वे भवन्तु सुखिनः तथा बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के आदर्श को चरितार्थ किया। जिसके लिए इन्होंने हिन्दुत्व को केन्द्र बनाकर समतामूलक तथा समरसतामूलक समाज के निर्माण का प्रयास किया। राजनीति तो मात्र इनका साधन था। इनका यह भी विश्वास था कि शैक्षिक उत्थान के बिना राष्ट्र का उत्थान असम्भव है। इसलिए इन्होंने सर्वप्रथम महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का गठन कर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया और आज वर्तमान में इस शिक्षा परिषद् से सम्बन्धित लगभग तीन दर्जन से अधिक शिक्षण–प्रशिक्षण, चिकित्सा तथा तकनीकी क्षेत्रों में

शिक्षण–संस्थान संचालित हो रहे हैं। इनका यह भी मानना था इस राष्ट्र के विकास का प्रमुख आधार राष्ट्र की प्राण वायु हिन्दुत्व ही है, जो धर्म नहीं बल्कि आचार और विचार की एक संहिता है। इस राष्ट्र की राष्ट्रीयता किसी आयातित विचारधारा पर नहीं थोपी जा सकती और सही अर्थों में राष्ट्र के विकास में उन्होंने जो मार्ग अपनाया वह सदा राष्ट्र की उन्नति में दिशा निर्देश देता रहेगा। इनके आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विचारों का अनुशरण करना इनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में शिक्षा परिषद् के उपाध्यक्ष तथा पूर्व कुलपति प्रो. यू. पी. सिंह ने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी भगवान श्री राम तथा बुद्ध की परम्परा के युग पुरूष थे क्योंकि जब भगवान श्री राम को रावण का वध करना था तो उन्होंने राज सत्ता का त्याग कर वनवास का वरण किया। भगवान बुद्ध को सत्य जानना था तथा दुःख से जनमानस को मुक्ति दिलानी थी तो उन्होंने भी राजसी वैभव का त्याग कर तप और साधना को चुना उसी प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी ने भी राष्ट्र हित तथा लोक कल्याण की भावना तथा राष्ट्र को अंग्रेजों की दास्ता से मुक्त कराने के लिए स्वयं को नाथ पन्थ से जोड़ा। इन्होंने मूल्यपरक शिक्षा को प्रोत्साहित किया, जिसमें राष्ट्रवाद तथा राष्ट्र हित की भावना सर्वोपरि थी। इनका यह मानना था कि शिक्षा राष्ट्र के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण होता है, जिससे हमारा सांस्कृतिक विकास ही नहीं बल्कि राष्ट्र का चतुर्दिक विकास सम्भव होता है।

सात दिवसीय व्याख्यान माला के छ दिनों में आयोजित व्याख्यानों की संक्षिप्त रूप–रेखा की प्रस्तुति तथा संचालन का कार्य संयोजिका डॉ. अर्चना सिंह ने किया। आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ. श्रीभगवान सिंह, डॉ. शशि प्रभा सिंह, डॉ. रविन्द्र गंगवार, डॉ. विवेक शाही, श्री धर्मचन्द्र विश्वकर्मा सहित महाविद्यालय के कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

डॉ.(शैलेन्द्र प्रताप सिंह)
प्राचार्य

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला
दिनांक - 15-21 सितम्बर, 2018
कार्यक्रम स्थल : संवाद कक्ष (पूर्वी परिसर)
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

व्याख्यान-माला

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला
प्रो. यू. पी. सिंह

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर